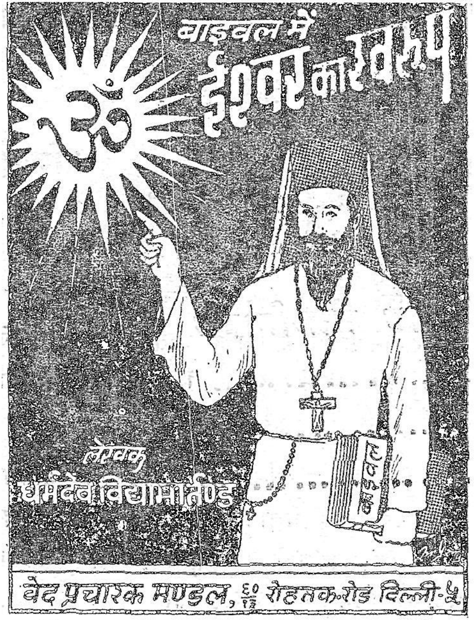


काशक—कीर्तिपाल शर्मा
चारक कम्पनी, मथुरा।

सुख संचारक कम्पनी, मथुरा की
बनाई

भारत व जर्मन गवर्नमेंट से **सुधासिंधु** रजिष्ट्री को हुई दवा

जिससे बिना किसी अनुपान के केवल पानी में थोड़ी सी बूंद डालकर पीने से ही फायदा हो जाता है, खासकर हैजेके लिये तो 'सुधासिन्धु' से बढ़कर संसार में दूसरी दवा है ही नहीं।

इसके सिवाय कफ, खांसी, शूल, संग्रहणी, अतिसार, दमा, पेटका दर्द, जी मिचलाना, कै करना, बार बार दस्त आना, सर्दी और जुकाम से आया हुआ बुखार, इन्फ्लूएंजा को फायदा करता है। कीमत ६५ पैसा

मिलने का पता
**सुख संचारक कम्पनी**

... भारतीय
पुस्तकालय 3852

# बाइबल में ईश्वर का स्वरूप

[ लेखक—श्री पं० धर्मदेव विद्यामार्तण्ड
आनन्द कुटीर ज्वालापुर ]

हमारे ईसाई भाई यह दावा करते हैं कि बाईबल ईश्वरप्रदत्त धर्म ग्रन्थ है जिसके दो भाग हैं। पुराना धर्मशास्त्र और नया धर्मशास्त्र इस लेखमाला में हम संक्षेप से यह बाईबल के प्रामाणिक अनुवादों के आधार पर दिखाना चाहते हैं कि ईश्वरीय ज्ञान माने जाने वाली इस बाइबल में ईश्वर का क्या स्वरूप बताया गया है। पहले हम पुराने धर्मशास्त्र के निम्नलिखित कुछ वाक्यों को भारत-लंका बाइबल समिति महात्मागांधी मार्ग बंगलौर १ द्वारा प्रकाशित हिन्दी अनुवाद के साथ निष्पक्ष विचारशील सब सज्जनों के सन्मुख प्रस्तुत करते हैं ... किसी उचित परिणाम पर पहुंच सकें।

5270

(१) उत्पत्ति की पुस्तक अध्याय २ ...

'यों आकाश और पृथ्वी और उनकी सारी सेना का बनाना समाप्त हो गया। २ और परमेश्वर ने अपना

काम जिसे वह करता था, सातवें दिन समाप्त किया उसने सातवें दिन अपने काम से विश्राम लिया।

( २ ) आदम और हव्वा ने अंजीर के पत्ते जोड़ २ कर लंगोट बना लिया। ८ तब य होवा परमेश्वर जो दिन के ठन्डे समय में बाटिका में फिरता था उसका शब्द उनको सुनाई दिया। तब आदम और उसकी पत्नी वाटिका के वृक्षों के बीज यहोवा परमेश्वर से छिप गये। (पृ.४)

(३) उसी अध्याय में आगे लिखा है।

" फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा मनुष्य भले बुरे का ज्ञान पाकर हममें से एक के समान हो गया है इस लिये अब ऐसा न हो कि वह जीवन के वृक्ष का फल भी तोड़ कर खा ले और सदा जीवित रहे।

तब यहोवा परमेश्वर ने उसको अदन की बाटिका में से निकाल दिया।

(४) उत्पत्ति की पुस्तकों के अध्याय ६ में लिखा है कि

" और यहोवा पृथ्वी पर मनुष्य को बनाने से पछतावा और मन में अति खेदित हुआ।

७ तब यहोवा ने सोचा कि मैं मनुष्य को जिसकी मैंने सृष्टि की है, पृथ्वी के ऊपर से मिटा दूंगा, क्या मनुष्य, क्या पशु, क्या रेंगने वाले जन्तु, क्या आकाश के पक्षी. सबको मिटा दूंगा क्योंकि मैं उनके बनाने से पछताता हूं पुराना धर्म शास्त्र पृ० ८ अंग्रेजी बाइबल में इत्यादि शब्द हैं।

इसी 'उत्पत्ति की पुस्तक' के अ० ११ में लिखा है– "सारी पृथ्वी पर एक भी भाषा और एक ही बोली थी। जब लोग नगर और गुम्मद बनाने लगे, तब इन्हें देखने के लिये यहोवा उतर आया।

और यहोवा ने कहा मैं क्या देखता हूं कि सब एक ही दल के हैं और भाषा भी उन सब की एक ही हैं और उन्होंने ऐसा ही काम भी आरम्भ किया और अब जितना वे करने का यत्न करेंगे, उसमें से कुछ उनके लिये अन-होना न होगा।

इस लिये आओ, हम उतर के उनकी भाषा में बड़ी गड़बड़ी डालें कि वे एक दूसरे की बोली को न समझ सकें।

इस प्रकार यहोवा ने उनको वहां से सारी पृथ्वी के ऊपर फैला दिया और उन्होंने उस नगर का बनाना छोड़ दिया। ( पुराना धर्मशास्त्र पृ० १४ )

उत्पत्ति की पुस्तक अ० १८, ७–६ में लिखा है—

१ इब्राहीम मम्रे के बांजों के बीच कड़ी धूप के समय तम्बू के द्वार पर बैठा हुआ था, तब यहोवा ने उसे दर्शन दिया।

३ इब्राहीम ने दण्डवत की और कहने लगा—हे प्रभो! यदि मुझ पर तेरी अनुग्रह की दृष्टि है तो मैं बिनती करता हूं कि अपने दास के पास से चले न जाना।

७ फिर इब्राहीम गाय, बैल के झुण्ड में दौड़ा और एक कोमल और अच्छा बछड़ा लेकर अपने सेवक को दिया और उसने फुर्ती से उसे पकाया।

८ तब उसने मक्खन और दूध और बछड़ा "जो उसने पकवाया था, लेकर उनके (जिसमें यहोवा और २ पुरुष थे) आगे परोस दिया और वे खाने लगे।" ( उत्पत्ति की पुस्तक अ० १८, पृ० २२) निर्गमन की पुस्तक के अध्याय १२ में यहोवा परमेश्वर ने मूसा को कहा।

१२ 'उस रात को मैं मिश्र देश के बीच में होकर जाऊंगा और मिश्र देश के क्या मनुष्य, क्या पशु, सबके पहिलौठों को मारूंगा और मिश्र के सारे देवताओं को भी मैं दण्ड दूंगा, मैं तो यहोवा हूं।

१३ और जिन घरों में तुम रहोगे उन पर वह लोहू तुम्हारे निमित्त चिह्न ठहरेगा अर्थात् मैं उस लोहू को देख कर तुमको छोड़ जाऊंगा और जब मैं मिश्र देश के लोगों को मारूंगा, तब वह विपत्ति तुम पर न पड़ेगी और तुम नाश न होगे।" इत्यादि (निर्गमन अ० १२ पुराना धर्म शास्त्र पृ० ६६ )

निर्गमन की पुस्तक अ० १२, २६ में लिखा है कि "और ऐसा हुआ कि आधी रात को यहोवा ने मिश्र देश में सिंहासन पर विराजने वाले फिरौन से लेकर गड़हे में हुए नघुए तब सब के पहिलौठों को, वरन् पशुओं तक के सब पहिलौठों को मार डाला।"

निर्गमन की पुस्तक अ० २०, ५ में यहोवा परमेश्वर अपने विषय में मूसा को कहा है कि 'मैं तेरा परमेश्वर यहोवा जलन रखने वाला ईश्वर हूं और जो मुझसे बैर

रखते हैं उनके बेटों पोतों और परपोतों को भी पितरों का दण्ड दिया करता हूँ। " (निर्गमन अ० २०, ५)

अंग्रेजी बाइबल में इत्यादि शब्द हैं।

अन्य भी सैकड़ों उद्धरण दिये जा सकते हैं किन्तु निष्पक्ष विचारशील लोगों के लिये इतने ही पर्याप्त हैं जिनसे स्पष्ट पता लगता है कि बाइबल का ईश्वर सर्व व्यापक, सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान न्यायकारी और दयालु नहीं अपितु वह आकाश में सिंहासन पर बैठा रहता है, वह वहां से उतर कर आता है, बाग में घूमता है, उससे मनुष्य अपने को छिपा सकते हैं, वह नहीं चाहता कि मनुष्यों को सच्चा ज्ञान हो और उनकी एक भाषा हो। वह बड़ा ईर्ष्यालु है जो मनुष्यों की भाषाओं में भी गड़बड़ डाल देता है। वह गाय के कोमल बछड़े का भी मांस खाता है, उसे पश्चाताप वा पछतावा होता है। वह लोहू के चिह्न के बिना मिश्र देशवासियों को औरों से पहचान नहीं सकता, वह दयालु और न्यायकारी नहीं बल्कि इतना क्रूर है कि मिश्र वासियों के छोटे २ बच्चों को भी बिना किसी अपराध के मार डालता है वह अपने मुख से कहता

है कि मैं तेरा परमेश्वर बड़ी जलन रखने वाला हूं। विचारशील पाठकों को क्या यह प्रश्न करने का अधिकार नहीं कि क्या ईश्वरीय वाक्य माने जाने वाले ग्रन्थ में ईश्वर का ऐसा असंगत वा बेहूदा बुद्धि तथा विज्ञान विरुद्ध स्वरूप पाया जाना उचित है ? क्या ईश्वर के अन्दर भी साधारण मनुष्य की तरह थकावट के कारण आराम की जरूरत पश्चाताप, ईर्ष्या वा जलन, पक्षपात, क्रूरता, बछड़े का मांस खाना, लोहू की निशानी के बिना भेद न कर सकना इत्यादि बातें मानी जा सकती हैं ? क्या कोई भी निष्पक्षपात बुद्धिमान् ईश्वर के ऐसे भद्दे स्वरूप को स्वीकार कर सकता है ? हम अपने यहूदी ईसाई तथा अन्य भाइयों से सप्रेम निवेदन करते हैं कि वे निष्पक्षपात होकर इस पर विचार करें और के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा हें।

कहां तो

' स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरं शुद्धमपापविद्धम्।
कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधा-
च्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः ॥ ' ( यजु० ४०—८ )

स ओतः प्रोतश्च विभूः प्रजासु यजु० ३२—८ )
इत्यादि मन्त्रों द्वारा प्रतिपादित ईश्वर का सच्चा युक्तियुक्त स्वरूप जिसे महर्षि दयानन्द जी ने वेदों के आधार पर इन सरल शब्दों में वर्णित किया कि 'ईश्वर सच्चिदानन्द-स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है उसी की उपासना करनी योग्य है । ' और कहां यह बाइबल प्रोक्त ईश्वर का स्वरूप ।

इनमें कितना आकाश पाताल का अन्तर है यह बुद्धिमान् स्वयं विचारें । बाइबल के नये धर्मशास्त्र वा न्यू टेस्टमेंट में वर्णित ईश्वरवाद पर हम दूसरे लेखों में विचार करेंगे ।

# रिंगलू (दाद मरहम)

यह सब प्रकार के दाद के लिये उत्तम दवा है खासकर पकने वाले दाद के लिये नई ईजाद है।

कीमत १२ ग्राम ६० पैसा

मिलने का पता—

सुख संचारक कम्पनी, मथुरा।

भारत सरकार से रजिष्ट्री किया हुआ

# बालसुधा

दुबले पतले और कमजोर बालकों को मोटा ताजा और तन्दुरुस्त बनाने वाली यही मीठी दवा है।

कीमत फी शीशी १.३० पैसा

मिलने का पता—

**सुख संचारक कम्पनी, मथुरा।**

सुख संचारक प्रेस, मथुरा।

ओ३म्

# ईसाई पादरी उत्तर दें !

सत्य ज्ञान का सूर्य उगा है,
उदय हुआ है स्वर्ण विहान ।
रह न सकेगा आज देश में,
ईसाई मत का अज्ञान ।।

प्रकाशक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
रामलीला मैदान, नई देहली-१

२८६० ५-३-५८

चतुर्थ बार ५००० ] [ मूल्य ३ पैसे

# ईसाई पादरी उत्तर दें !

आर्यसमाज के प्रसिद्ध दार्शनिक विद्वान् स्वामी दर्शनानन्द जी ने निम्न १६ प्रश्न ईसाई पादरियों से पूछे थे किन्तु आज तक एक भी पादरी इनका उत्तर न दे सका। प्रश्न इस प्रकार हैं :—

प्रश्न १—तौरेत के प्रकट होने के पूर्व संसार में कौन-सा विद्या-सम्बन्धी नियम था जिसके बतलाने के वास्ते तौरेत प्रकट हुई। तौरेत में क्या ईश्वर लिखना भूल गया था जिसके बतलाने के वास्ते जबूर प्रकट हुई और जबूर में क्या कमी रह गई थी जिसको इञ्जील द्वारा पूरा किया गया था ?

प्रश्न २—जब कि बायबिल के अनुसार ईश्वरों की एक जाति सिद्ध होती है कोई अकेला ईश्वर नहीं, देखो पोलेस रसूल का खत ईब्रानियों को (बाब १ आयत ६)

हे परमेश्वर चूंकि तूने नेकी से प्रेम और बदी से द्रोह रक्खा इस वास्ते हे ईश्वर, तुझको तेरे ईश्वर ने तेरे शरीकों की अपेक्षा खुशी के तेल से अधिक मनसूब किया, ऐसा ही उत्पत्ति की पुस्तक से भी प्रगट है तो किस ईश्वर ने संसार को उत्पन्न किया ?

प्रश्न ३—जब कि बायबिल के अनुसार ईश्वर ने र्य को चौथे दिन उत्पन्न किया और यह बात सर्वसम्मत कि जब सूर्य भूमि-भाग के सामने हो तो उस भाग पर दिन और जिसके सामने न हो उस जगह रात्रि होती है तो पहले तीन दिन किस प्रकार हो गए ?

प्रश्न ४—उत्पत्ति की पुस्तक में लिखा है कि ईश्वर का आत्मा जल पर तैरता था। क्या आत्मा कोई वस्तु है या निराकार ? यदि प्राकृतिक है तो किस उपादान से बनी है और निराकार है तो किस प्रकार तैर सकती

प्रश्न ५—क्या ईश्वर ससीम है या असीम ? यदि ससीम है तो सर्वशक्तिमान् किस प्रकार हो सकता है ?

यदि असीम है तो समस्त बायबिल रद्द हो जाती है क्यों कि असीम का दायां हाथ नहीं हो सकता। जब दायां हाथ है ही नहीं तो मसीह दायें हाथ पर कैसे बैठ सकता है ?

प्रश्न ६ – हकाशफात यहुन्ना में खुदा की ७ रूहें बतलाई हैं और उत्पत्ति की पुस्तक में एक रूह का जल पर तैरना लिखा है; दोनों में से कौन सच्चा है ? यदि ७ रूहें हैं तो उत्पत्ति के समय एक रूह तो जल पर तैरती थी, शेष ६ कहाँ थीं ?

प्रश्न ७ – ईश्वरीय ज्ञान का क्या लक्षण है और ईश्वरीय ज्ञान की किस कसौटी से सच्चाई मानी जाती है?

प्रश्न ८ – मसीह ने जो समस्त पैगम्बरों को बुरा कहा कि जितने मुझसे पहले आए सब चोर और डाकू थे, जो अपने सब पैगम्बरों को चोर और डाकू बतलावे और अपने को सबसे अच्छा कहे आप किस कसौटी से उसकी बात को सच्चा सिद्ध करते हैं ?

प्रश्न ९—क्या जो मसीह को खुदा का बेटा मानते है तो उसको किस प्रकार का बेटा मानते हैं क्योंकि बेटे तीन प्रकार के होते हैं-एक सपूत, दूसरे पूत और तीसरे कपूत

प्रश्न १०—मसीह शरीर की अपेक्षा से ईश्वर का पुत्र है या आत्मा की अपेक्षा से और वह अव्वल से बेटा है या मरियम के पेट से पैदा होने के बाद बेटा हुआ ?

प्रश्न ११—मसीह बाप के बिना अपनी माता से उत्पन्न हुआ, यह प्रत्यक्ष है या नहीं, अनुमान हो ही नहीं सकता क्योंकि उसके वास्ते कोई मिसाल है ही नहीं कि जहाँ अकेली माता से सन्तान उत्पन्न हुई और बिना युक्ति और दृष्टान्त से कोई अनुमान नहीं हो सकता। अतएव किस प्रमाण से आप दावे को सिद्ध करेंगे ?

प्रश्न १२—ईसाई मत में मुक्ति को शाश्वत माना है और शाश्वत वह वस्तु होती है जो अनादि हो क्योंकि शाश्वत का आदि और अन्त दोनों नहीं हो सकते। अतएव मुक्ति आदि है इसलिए शाश्वत हो नहीं सकती। वह मुमकिन हो सकती है क्योंकि मुमकिन के आदि और अन्त दोनों होते हैं और आप मुक्ति का अन्त नहीं मानते इसलिए ईसाई मत की मुक्ति असम्भव है। आप संसार को असम्भव के गड्ढे में क्यों गिराते हो ?

प्रश्न १३—ईसामसीह की वंशावली से सिद्ध है कि इब्राहीम की ४१ वीं पीढ़ी में यूसुफ उत्पन्न हुआ और ४२ वीं पीढ़ी में मसीह को माना जाता है। जब तक मसीह यूसुफ के औसर से उत्पन्न नही तो इब्राहीम की सन्तान में से कैसे हो सकता है ? जो बाप का बेटा न हो तो दादे का पोता किस प्रकार हो सकता है ?

प्रश्न १४—ईसाई मत के अनुसार पाप का कारण क्या है ? पाप शरीर में रहता है या आत्मा में ?

प्रश्न १५—आत्मा को आप साकार मानते हैं निराकार, यदि साकार है तो किन परमाणुओं से ? यदि निराकार है तो किस प्रकार उत्पत्ति हो सकती है ? किसी निराकार द्रव्य की उत्पत्ति सिद्ध करें।

प्रश्न १६—आप ईश्वर के अतिरिक्त दूसरी वस्तु को अनादि नहीं मानते हो, जीव और प्रकृति की उत्पत्ति से पहले ईश्वर किसका स्वामी और किस जगह सीमाबद्ध था ?

आज तक एक भी ईसाई पादरी इन प्रश्नों का उ नहीं दे सका। वस्तुतः बुद्धि के प्रयोग का तो इनके

में कोई स्थान है ही नहीं। यह तो छल फरेब और धोखे से ही लोगों को बहकाना जानते हैं।

इनकी प्रार्थना कितनी बेबुनियाद है तनिक इस पर तो विचार कीजिए। ईसाई लोग जब प्रार्थना करते हैं तब यह प्रार्थना करते हैं कि हे हमारे आसमानी बाप, तू हमारी आज की रोटी हमें दे और जैसा कि तेरा राज्य आसमान पर है ऐसा ही ज़मीन पर आवे। इस प्रार्थना से ईसाइयत की समस्त दशा ज्ञात हो जाती है कि ये खुदा को शरीर सहित मानते हैं और उसका राज्य भी आसमान पर मानते हैं क्या ज़मीन पर खुदा का राज्य नहीं? तो ईसाई लोग जो ज़मीन पर रहते हैं क्या शैतान के राज्य में रहते हैं? ईसाई मज़हब की गलत तालीम ने खुदा को इस कदर बदनाम किया है कि जिसका जिक्र न करना ही बेहतर है। यूरोप में जितनी नास्तिकता फैली है वह बिल्कुल इसी ग़लत शिक्षा से फैली है और जितने तर्क यूरोप के विज्ञानवादियों ने ईश्वर के अस्तित्व के विरुद्ध दिए हैं उनसे केवल ईसाईयत का खण्डन होता है, शेष मतों पर कुछ भी असर नहीं पहुँचता। इंजील में

मसीह ने यह भी कहा है कि जितने मुझसे पहले आए सब चोर और डाकू थे। मानो इस जगह अपने से पहले बुजुर्गों को चोर और डाकू बतलाता है। यही कारण हुआ कि मसीह के विरोधी यहूदी हो गए और उन्होंने उसको मार डाला क्योंकि वह उनके बुजुर्गों को चोर और डाकू कहता था। इंजील में खुदा की रूह से मसीह पर कबूतर की शक्ल में आना बतलाया गया है परन्तु यह नहीं बतलाया है कि वह कबूतर मसीह के मुंह के रास्ते उसके पेट में चला गया था और किस तरह वह आत्मा मसीह के अन्दर प्रविष्ट हो गई ?

उक्त विवेचन से यह भली-भाँति ज्ञात हो जाता है कि ईसाइयत दार्शनिक दृष्टिकोण से सर्वथा अधूरी है और तर्क व बुद्धि के आधार पर विचार करने से एक क्षण भी नहीं ठहर सकती।

आज विज्ञान का युग कहा जाता है किन्तु ईसाइयत का सारा आधार ज्ञान-विज्ञान के विरुद्ध है। इनके असत्य विचारों के कुछ नमूने देखिए :—

(१) खुदा सातवें आसमान पर तख्त पर बैठा है

जिसके दाईं ओर मसीह खड़े हैं।

(२) ईसा क्वांरी कन्या के पेट से उत्पन्न हुए।

(३) सृष्टि से पहले कुछ नहीं था परन्तु ईश्वर ने अभाव में से भाव की उत्पत्ति कर सृष्टि को बना दिया।

(४) प्रारम्भ में गहरे जल के ऊपर अंधियारा था। तथा परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मंडराता था।

(५) ईश्वर ने सूर्य को चौथे दिन बनाया।

(६) सर्प ने आदम की स्त्री से बातें की।

(७) ईश्वर के आदेशानुसार नूह ने प्रलय के समय अपनी तीन सौ हाथ लम्बी, पचास हाथ चौड़ी तथा तीन हाथ ऊँची नाव में संसार के समस्त प्राणियों से एक-एक जोड़े को रख दिया। (तो० पर्व ३)

(८) ईश्वर का हाबील और अबराहम से बात करने पृथ्वी पर आना और फिर चला जाना।

(९) तब भूतग्रस्त मनुष्य कब्रस्थान में से निकल उनसे आ मिले (इ० म० प० ८)

(१०) सात रोटियों तथा छोटी मछलियों से यीशु ने

चार सहस्र भूखे पुरुषों तथा सैकड़ों स्त्री और बालकों को तृप्त किया। (इ० म० प० १५। आ० ३४)

(११) भोर को जब बहम घर को जाता था तब उसको भूख लगी और मार्ग में एक गूलर का पेड़ देख के वह उसके पास आया परन्तु उसमें और कुछ नहीं पाया केवल पत्ते और उसको कहा कि तुझमें फिर कभी फल न लगेंगे। इस पर गूलर का पेड़ तुरन्त सूख गया।

(१२) और जैसे बड़ी बयार से हिलाए जाने पर गूलर के वृक्ष से उसके कच्चे गूलर झड़ते हैं तैसे आकाश से तारे पृथ्वी पर गिर पड़े और आकाश पत्र की नाईं जो लपेटा जाता है अलग हो गया। (य० प० प० ६। अ० १३।१४)

(१३) और (स्वर्ग में) घुड़चढ़ों की सेनाओं की संख्या २० करोड़ थी। (यो० प्र० प० ६ आ० १६)

क्या एक भी पादरी आज इन असम्भव घटनाओं की सत्यता सिद्ध करने को तैयार है? यदि नहीं तो झूठे सिद्धान्तों और मन-घड़न्त गप्पों के आधार पर दुनिया को बहकाने से बढ़कर और पाप क्या हो सकता है? ईसाइयत

के धर्म-ग्रन्थ पाप और अपराध करने की प्रेरणाओं से भरे पड़े हैं। कुछ उदाहरण देखिए।

## चोरी की आज्ञा

और उन्होंने मिस्रियों से (चाँदी) रुपए के बर्तन और सोने के बर्तन और कपड़े ऐरियन लिए और उन्होंने मिस्र को लूट लिया। (खुरूज १२।३५।३६ पृ० ८७)

## झूठ बोलने की आज्ञा

उस वक्त एक रूह निकली, खुदावन्द के सामने खड़ी हुई और बोली कि उसे तरगीब दूंगी, फिर खुदावन्द ने फरमाया किस तरह से। वह बोली मैं रवाना होऊँगी और झूठी रूह बनके उसके सारे नबियों के मुंह में पडूंगी और वह बोला तू तरगीब देगी और गालिब भी होगी रवाना हो और ऐसा कर।

(एक सलातीत २२ २१-२२ पृ० ४६८)

## व्यभिचार की आज्ञा

लेकिन ये लड़कियाँ जो मर्द की साहबत से वाकिफ

नहीं उन्हें अपने लिए जिन्दा रख (गिन्ती ३१,१८ पृ०) पृ० २१६ ।

## मांस खाने की आज्ञा

सब जीते चलते जानवर तुम्हारे खाने के वास्ते हैं ।
(पैदाइश ५-३ पृ० ५३)

जो कुछ कसायबों की दुकान पर बिकता है वह खाओ । (१ कुरन्थियों १० : २५ पृ० २४)

## युद्ध की आज्ञा

खुदावन्द साहिबे जंग है (खुरुज १५ । ३ पृ० २४८)

उत रबुल अफ़वाज़ है ।(यसायाह ५१।१५ पृ० ८६४)

खुदावन्द मेरी चट्टान मुबारक हो जो मेरे हाथों को जंग करना और मेरी उंगलियों को लड़ना सिखता है (जबूर १४४ । पृ० ७६१)

मैं शफ़कत न करूंगा और हरगिज रियायत न करूंगा और रहम न दिखाऊंगा बल्कि उन्हें हलाक करूंगा । (यरैनिया १३ । १४ पृ० ८६७)

तुम लोगों को जिन्हें खुदावन्द तेरा खुदा तेरे हवाले करेगा निगल जायेगा उन पर मुलक तेरी शफकत की नज़र न होगी। (इस्तिस्ना ७।१६ पृ० २२६)

सो अब तू जा और अमालिक को मार और सब जो कुछ कि उनका हरम कर और उन पर रहम मत कर बल्कि मर्द और औरत नन्हें बच्चे और शीरख्वार और बैल, भेड़ और ऊँट और गधे तक सबको कत्ल कर।
(१ सेमुअल १५। ३ पृ० ३६४)

खुदावन्द के सन्दूक के भीतर देखा सो उसने ५० हजार और ७० आदमी उसमें के मार डाले।
(१ सेमुअल ६। १६ पृ० ३५९)

खुदावन्द ने अजिका तक आसमान से उन पर बड़े पत्थर गिराये और वे मुए (याशुआ १०।११ पृ० २८७)

उक्त उद्धरणों से यह अत्यन्त स्पष्ट है कि भारत के उद्धार की चेष्टा करने वाले ईसाई पादरियों का मज़हब स्वयं अज्ञान पर आधारित है उस पर चल कर किसी को भी किसी भी तरह सुख और शान्ति नहीं मिल सकती।

पाठकगण यह तो आपको उक्त विवेचन से पता लग

गया होगा कि ईसाई मत ज्ञान और बुद्धि को तो पाप का कारण बतलाकर पहले अलग करा देता है जब बुद्धि पत्थर हो गई तो फिर अन्वेषण कौन कर सकता है क्योंकि उत्पत्ति की पुस्तक के अनुसार शैतान की प्रदत्त बुद्धि आदम को पापी बनाने वाली है केवल निर्बुद्धि पशु ही इस मत में अच्छे हैं और मसीह ने इंजील में भी इस बात का बतलाया है क्योंकि वह अपने समस्त अनुयायियों को भेड़ें और अपने को गडरिया बतलाता है। भला जो गड़रिये की भेड़ें हैं वे क्या अन्वेषण कर सकती हैं ? चाहे कोई ईसाई कितना बुद्धिमान् हो वह जब तक भेड़ बन ईसाई मत की बातों को स्वीकार न करे तब तक उसका मसीह पर ईमान कामिल नहीं जो मनुष्य उनकी भेड़ों को बुद्धि सिखावे उसे यह शैतान का बहकाया हुआ कह देते हैं और स्वयं भेड़ें बन जाने से ज्ञान नहीं रहा। ईसाइयों का ईश्वर तो मनुष्यों को असभ्य रखना चाहता था किन्तु सर्प की कृपा से न रख सका परन्तु उसके बेटे मसीह ने अपने पिता का काम पूरा कर दिया अर्थात् मनुष्यों से बुद्धि दूर करवा कर उनको भेड़ें बना दिया और स्वयं

गडरिया बन गया और करोड़ों मनुष्य उस गडरिये गुरु की पैरवी में लग गए। जहाँ ईसाई मत ने अक्ल के दखल को मजहब से पृथक् किया वहाँ हजारों गलत बातों को स्वीकार करना पड़ा क्योंकि बुद्धि ही एक हथियार है जिसके कारण मनुष्य गलतियों से बचकर सन्मार्ग पर जा सकता है।

पाठकों ने देखा कि ईसाइयत की असलियत क्या है। उसमें न सत्य है, न शांति, न प्रेम है, न युक्ति। कल्याण की भावना का तो वहाँ लेश भी खोजने पर नहीं मिलेगा।

अतः सभी को उचित है कि ईसाइयत के अन्धकार से निकल कर सच्चे ईश्वरीय ज्ञान वेद की शरण में आ कर अपना मनुष्य-जन्म सार्थक करें।

ईसाई पादरियों को उचित है कि वे सच्चे हृदय से [illegible]चार करें कि क्या उनका पक्ष भ्रांति पर नहीं टिका। यदि टिका है तो क्यों नहीं धन के चक्कर को छोड़ सत्य की शरण में आ अपने असत्य मार्ग को छोड़ सत्य की राह पर चलने का निश्चय करते ?

हम आर्य समाज की ओर से सभी को वेद की छाया में आने का निमन्त्रण देते हुए ईसाइयों के अज्ञान से सभी को बचने की प्रार्थना करते हैं।

संसार का उपकार करना, मानव मात्र का कल्याण करना, जाति-भेद, नीच-ऊंच के भेद-भाव समाप्त करना, सत्य, प्रेम और मानवता का प्रसार करना

# आर्यसमाज का लक्ष्य है !

आप भी धरती पर सुख-शान्ति और आनन्द का साम्राज्य स्थापित करने के लिए

आर्यसमाज की शक्ति बढ़ाइए

गुरु वि...
सन्दर्भ पुस्तकालय
परिग्रहण क्रमांक ....
दयानन्द महिला महावि...
5270

प्रका

## सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,

दयानन्द भवन, नई दिल्ली-१

सार्वदेशिक प्रेस, दरियागंज, दिल्ली।